

कृषि के विकास में सोशल मीडिया की भूमिका

बिंदिया दत्त¹ एवं नीतू शर्मा²

¹सह प्राध्यापक प्रसार शिक्षा व संचार प्रबंधन विभाग, चौधरी सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर, हि० प्र०

²विस्तार विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान, काँगड़ा, चौधरी सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर, हि० प्र०

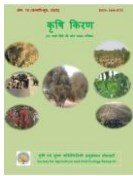
सोशल मीडिया 1997 में अविष्कारिक इलेक्ट्रॉनिक संचार का ऐसा माध्यम है जो उपभोक्ताओं के मध्य विचारों और सूचनाओं को साझा करने की सुविधा प्रदान करता है। यह इंटरनेट के माध्यम से एक वर्चुअल वर्ल्ड स्थापित करता है जिसे उपयोग करके व्यक्ति कहीं भी रहकर किसी से भी अपना सामंजस्य स्थापित कर सकता है। यद्यपि इसका अविष्कार विश्व में व्यक्तियों को एक दूसरे के साथ जोड़े रखने के लिए किया गया था परन्तु समय के साथ आज यह हर क्षेत्र में मनुष्य के जीवन का यह एक अहम हिस्सा बन गया है। कृषि क्षेत्र में भी सोशल मीडिया कई प्रकार से सहायक बनकर बड़े आयाम स्थापित करने में सक्षम है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है और कृषि के विकास लिए देश में कार्यरत विभिन्न संस्थान कई प्रकार के शोध करके नयी तकनीकों को उजागर कर रहे हैं। इन तकनीकों का किसानों तक प्रसार करना देश की प्रगति के लिए अति आवश्यक है। पारम्परिक प्रसार प्रणाली में प्रसार अधिकारी किसानों से सीधा मिलकर इन नवीन तकनीकों को साँझा करते थे परन्तु आज के

समय की बात करें तो किसानों की संख्या की तुलना में प्रसार कर्मियों की संख्या बहुत कम है। एक शोध में यह पाया गया है की सरकारी व निजी प्रसार सेवाओं की पहुँच केवल 41 प्रतिशत किसानों तक ही संभव है। जिस कारण कृषि की नयी तकनीकों का किसानों तक विस्तारीकरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है क्योंकि समयबद सूचना कृषि क्षेत्र की प्रगति पर अनुकूल प्रभाव डालती है। अतः किसानों का समयबद, प्रासांगिक व विश्वसनीय सूचना स्रोतों तक पहुँच कृषि क्षेत्र की प्रगति पर अनुकूल प्रभाव डाल सकती है। अतः इस विषय में सोशल मीडिया कई प्रकार से महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है व कृषि क्षेत्र को विश्वस्तरीय मुकाम तक पहुँचा सकता है।

कृषि विस्तार में सोशल मीडिया की भूमिका:-
सोशल मीडिया द्वारा कृषि की जानकारी का आदान प्रदान व ज्ञान:-

सोशल मीडिया द्वारा कृषि के बारे में जानकारी के नए आयाम स्थापित हो रहे हैं। युट्यूब जैसे प्लेटफार्म अपने आप में ज्ञानवर्धक जानकारी का विशाल भंडार है जिसमें विभिन्न कृषि सम्बंधित ज्ञान जैसे की



विश्वभर में कृषि करने के नवीनतम तरीके जिसमें कृषि विविधिकरण, कृषि में उपयोग होने वाले नए उपकरणों आदि की जानकारी मिलती है जिससे हमारे किसान सशक्त हो रहे हैं। सोशल मीडिया हर प्रकार की भौगोलिक सीमाओं को समाप्त कर किसानों को विभिन्न जानकारीयां प्रदान कर रहा है। युटुयुब का डिजिटल ग्रीन विभिन्न स्थानीय भाषाओं में विडियो डालकर कृषि में एक बड़ा बदलाव ला रहा है।

कृषि उत्पाद का बाजारीकरण व बाजार तक पहुँच:-

सोशल मीडिया किसानों को उपभोक्ताओं और खुदरा विक्रेताओं के साथ सीधा संपर्क स्थापित करते हुए एक गतिशील बाजार उपलब्ध करा रहा है तथा किसानों के उत्पादों के बाजारीकरण में एक अहम भूमिका निभा रहा है। सोशल मीडिया के फेसबुक व युटुयुब के माध्यम से किसान अपने उत्पाद के उपभोक्ताओं से संपर्क स्थापित कर बिना बिचोलिये के मोल भाव कर सकते हैं व अपने उत्पाद का सही मूल्यांकन कर मुनाफा कमा सकते हैं।

समुदाय संगठन व सहायता नेटवर्क स्थापित करना:-

सोशल मीडिया किसानों को एक ऐसा मंच उपलब्ध कराता है जहाँ विभिन्न क्षेत्रों के किसान एकजुट होकर कृषि क्षेत्रों में अपने पारम्परिक ज्ञान व अनुभवों को वर्चुअल माध्यम से प्रदर्शित कर सकते हैं। इससे

किसानों को एक दूसरे के अनुभवों को अपने खेतों में उपयोग करने का अवसर मिल रहा है व अपने कृषि में आने वाली समस्याओं का समाधान भी आपसी बातचीत से निकाल सकते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से किसान विशेषज्ञों से कृषि सम्बंधित किसी भी प्रकार की जानकारी जैसे कृषि की नवीन तकनीकों से लेकर फसल में आने वाली कोई भी समस्या का समय रहते हल लेने हेतु सीधा संपर्क स्थापित कर सकते हैं।

सोशल मीडिया द्वारा युवाओं का कृषि के प्रति रुझान:-

सोशल मीडिया युवाओं में कृषि को एक व्यवसाय के रूप में अपनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सोशल मीडिया में अपलोड किये जाने वाले युवाओं की कृषि उद्यमियों के रूप में प्रदर्शित सफल कहानियां देश के अन्य युवाओं को प्रेरित कर रही हैं। एक सर्वेक्षण में यह पाया गया है कि 72.5 प्रतिशत युवा किसानों द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग किया जा रहा है। जिसमें सबसे अधिक 61.5 प्रतिशत व्हाट्सएप्प का व 37 प्रतिशत युटुयुब का कृषि से सम्बंधित विषयों के लिए उपयोग किया जा रहा है।

कृषि में सोशल मीडिया के लाभ और चुनौतियाँ:-

लाभ:-

- सोशल मीडिया के माध्यम से किसानों को नवीनतम कृषि तकनीक, मौसम

- और बाजार की जानकारी जल्दी मिल सकती है।
- किसान, विशेषज्ञों से सीधे सलाह ले सकते हैं।
 - किसानों को नयी योजनाओं और सरकारी नीतियों की जानकारी दी जा सकती है।
 - ग्रामीण व दूरदराज के क्षेत्रों में भी जानकारी पहुंचाई जा सकती है।
 - सभी किसानों के पास स्मार्टफोन या इन्टरनेट तक पहुँच नहीं होती।
 - सोशल मीडिया पर गलत या भ्रामक जानकारी का प्रसार हो सकता है।
 - कई किसानों को सोशल मीडिया के सही उपयोग का ज्ञान नहीं होता।
 - कई मंच केवल अंग्रेजी में उपलब्ध हैं जो ग्रामीण किसानों के लिए कठिनाई पैदा कर सकते हैं।

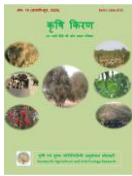
चुनोटियाँ :-

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म व कृषि सूचना:-

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म	मुख्य उपयोग	उदाहरण
फेसबुक	कृषि समूह बनाना, अनुभव साझा करना, जानकारी देना	फसल प्रबंधन, मौसम की जानकारी, सरकारी योजनाएं, नयी तकनीकें
यु ट्यूब	वीडियो के माध्यम से शिक्षण और प्रदर्शन	उन्नत कृषि तकनीक, मशीनरी का उपयोग, जैविक खेती
व्हाट्सएप	छोटे समूहों में त्वरित सूचना प्रसार	मौसम अपडेट, बाजार कीमतें, नीतिगत घोषणाएं
ट्विटर	त्वरित अपडेट और विशेषज्ञों से संपर्क	मौसम अपडेट, बाजार कीमतें, नीतिगत घोषणाएं
ब्लॉग	अनुभव और ज्ञान का विस्तृत लेखन	कृषि समस्याओं और उनके समाधानों पर विस्तृत लेख
इन्स्टाग्राम	दृश्य सामग्री साझा करना	फसले, खेती के तरीके

सोशल मीडिया खेती के क्षेत्र में बहुत ही महत्वपूर्ण साधन बनता जा रहा है, जो किसानों और कृषि व्यवसाय के लोगों को बड़े भौगोलिक क्षेत्रों से जोड़ता है। इसका लाभ उतना बड़ा या छोटा हो सकता है जितना

किसान चाहते हैं, यह इस पर निर्भर करता है कि वे इस पर कितना समय बिताना चाहते हैं। सोशल मीडिया कृषि नवाचार में शामिल विभिन्न पक्षों के बीच बातचीत और सूचना प्रवाह को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका



निभाता है और कृषि विस्तार और सलाहकार सेवा प्रदाताओं की क्षमताओं को भी बढ़ाता है। उपयोगकर्ता अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर कृषि से सम्बंधित मुद्दों पर जानकारी का आदान प्रदान करते हैं और चर्चा करते हैं। इस जानकारी के साझा करने से किसानों के विपणन और नेटवर्क बनाने में सुविधा होती है। इसका उपयोग लिंक,

समाचार लेख, जानकारी, फीडबैक साझा करने और प्रश्नों के लिए भी किया जाता है। अतः यह कहना उचित होगा की सोशल मीडिया में संचार को बदलने में बड़ी क्षमता है व यह प्रसार गतिविधियों में एहम भूमिका निभा रहा है।